धान एवं मक्के की फसल में इस समय क्या करें

पंतनगर। 7 सितम्बर, 2009। तराई, भावर एवं मैदानी खेत्रों में खरीफ के मौसम में विलम्ब से तथा कम वर्षा के कारण विभिन्न फसलों की उपज में कमी सम्भावित है। इसको ध्यान में रखते हुए, कमी के प्रभाव को दूर करने के लिए पंतनगर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान और मक्के की फसल में अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं।

धान की फसल में शीघ्र पकने वाली प्रजातियों में शेष 25 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रजातियों में शेष 30 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हैक्टेयर की दर से बालियों के गोभ से निकलने से पहले छिड़काव (टापड्रेसिंग) के द्वारा दें। कीड़ों और बीमारियों के प्रकोप की संभावना इस समय ज्यादा रहती है। यदि खेत में औसतन 8–10 प्रतिशत मृत गोभ, तना छेदक एवं 10–15 भूरा/सफेद फुदकों की संख्या प्रति पौध दिखाई दे तो कीटनाशक मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. की 1.4 लीटर मात्रा 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं जल निकास की व्यवस्था करें। मक्के की फसल में ध्यान रखे कि सिल्किंग से लेकर दाने पड़ने की अवस्था तक भूमि में पर्याप्त नमी होनी जरूरी है। इसलिए जरूरत के अनुसार सिंचाई करें। फसल में लगने वाले विभिन्न प्रकार के कीड़ों की रोकथाम के लिए इण्डोसल्फान 35 ई.सी. या कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 1.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। मक्के में इस समय लगने वाली तुलासिता एवं पत्तियों के झुलसा रोगों की रोकथाम के लिए जिंक मैगनीज कार्बामेट की 2.5 कि.ग्रा. मात्रा आवश्यक पानी में घोलकर छिड़काव करें। मक्के की संकुल एवं देशी प्रजातियाँ सामान्यतः इस समय तक पक जाती हैं। यदि पक गई हैं तो उनकी कटाई करें।